प्रकाशन तिथि : 01 जनवरी, 2020
प्रेषण तिथि : 04 जनवरी 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 20 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

धौलासर से दुबई तक मनाया संघ स्थापना दिवस

22 दिसंबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ ने 73 वर्ष की यात्रा पूर्ण कर 74वें वर्ष में प्रवेश किया। स्वयंसेवकों तथा समाजबंधुओं द्वारा देश-विदेश में संघ का 74वां स्थापना दिवस उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर संचालन प्रमुख द्वारा 74 स्थानों पर कार्यक्रम रखने का लक्ष्य दिया गया था परंतु समाज के संघ के प्रति उत्साह का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि 22 दिसंबर को 100 से भी अधिक स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए। यह वर्ष संघ के द्वितीय संघ प्रमुख पूज्य आयुवान सिंह हुडील का जन्म शताब्दी वर्ष भी है इसलिए उत्साह द्विगुणित हुआ। जैसलमेर के सुदूर गांव धौलासर में शाखा के पांच बच्चों से लेकर दुनिया के आधुनिकतम शहरों में शुमार दुबई में रहने वाले स्वयंसेवक इस उत्साह में अपने-अपने स्थान पर सक्रिय हुए। सभी स्थानों पर माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त नववर्ष संदेश का पठन किया गया।

जयपुर में केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में स्थापना दिवस समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसेवक तथा समाजबंधु सम्मिलित हुए। इसी प्रकार सीकर के लक्ष्मणगढ़ में भी श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी उपस्थित रहे। नेहरू स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि यह सृष्टि ईश्वर द्वारा निर्मित है और ईश्वर को प्राप्त करना ही मानव का लक्ष्य है। मानव को इस लक्ष्य को प्राप्त करने से रोकने वाली माया भी ईश्वर की ही बनाई हुई है। यह माया हमारी परीक्षा है। प्राचीन काल से ही ऋषियों द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - ये चार पुरुषार्थ बताए गए हैं। मोक्ष अन्तिम और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुरुषार्थ है और धर्म, अर्थ व काम की महत्ता मोक्ष को उपलब्ध कराने में ही है। किंतु आज धर्म और मोक्ष गौण हो गए हैं और मनुष्य के लिए अर्थ और काम ही प्रधान हो गए हैं। ऐसे में गीता हमें मार्ग दिखाती है। गीता के अनुसार अपने स्वाभाविक कर्म को करने वाला मनुष्य परमसिद्धि को प्राप्त करता है और ईश्वर ही परमसिद्धि है। हमारा यह स्वाभाविक कर्म हमारे जन्म से निर्धारित होता है। हमें क्षत्रिय के घर में जन्म मिला है अतः क्षात्रधर्म का पालन करना ही हमारा स्वाभाविक कर्म है। श्री क्षत्रिय युवक संघ क्षात्रधर्म पालन का ही कार्य कर रहा है। यद्यपि परिस्थितियाँ विपरीत हैं, जमाने के बहाव के विपरीत तैरने का कार्य है, किंतु फिर भी संघ इसमें लगा हुआ है क्योंकि यही करने योग्य कार्य है। इस कार्य को करने के लिए जिस शक्ति और सामर्थ्य की आवश्यकता है, संघ उसे समाज में संगठन और ऐक्य का निर्माण करके जुटा रहा है। कार्यक्रम को यशवर्धन सिंह झेरली तथा डॉ नगेन्द्र सिंह नाथावत ने भी संबोधित किया। केंद्रीय कार्यकारी रेवंतसिंह पाटोदा ने संघ का परिचय दिया तथा प्रांतप्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर ने नववर्ष संदेश का पठन किया। संचालन श्रवण सिंह बगड़ी ने किया। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की शास्त्रीनगर कॉलोनी में अग्रसेन धर्मशाला में भी स्थापना दिवस के उपलक्ष में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ सिर्फ मात्र एक संस्थान नहीं, एक संगठन नहीं अपितु एक दर्शन है। संघ एक व्यक्ति की पीड़ा है जो लाखों लोगों की पीड़ा बन गई।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'पंथ या संप्रदाय नहीं, विरासत बचाने का कार्य है संघ'

स्थापना दिवस पर 'संघशक्ति', जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त उद्बोधन का संपादित अंश :

हम दशहरा मानते हैं, एक विजयोत्सव मनाते हैं कि भगवान राम ने बुराई के स्थूल स्वरूप रावण का अंत किया, संसार में शांति स्थापित की। राम के अयोध्या लौटने पर उनके स्वागत में दीपोत्सव मनाते हैं। आज का दिन क्षत्रिय समाज के लिए ऐसा ही एक पर्व है और इसके पीछे क्षत्रिय युवक संघ की भूमिका भी है। सन 1944 के 16 अक्टूबर के दीपावली के दिन पिलानी में विद्याध्ययन कर रहे 20 वर्षीय युवक पूज्य तनसिंह जी, आज के दृष्टिकोण से उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं थी समाज के प्रति सोचने की, परंतु जिसके पीड़ा होती है, वह दीपावली नहीं मना सकता। उसी दिन से क्षत्रिय युवक संघ का बीज डला, हमारी माँ राजपूत जाति के गर्भ में क्षत्रिय युवक संघ स्थापित हुआ। डेढ़ वर्ष पश्चात एक सुसंस्कृत रूप में 22 दिसंबर 1946 को इसकी स्थापना हुई। पूज्य श्री तनसिंह जी अन्य विषयों के साथ ज्योतिष के भी ज्ञाता थे। 22 दिसंबर को साल भर में सबसे बड़ी रात्रि होती है जिसके बाद दिन के बड़े होने का क्रम प्रारम्भ होता है। सूर्य उत्तरायण को प्राप्त होता है, प्रकाश की वृद्धि होती है। इसीलिए ऐसे दिन जो विकास का प्रतीक हो, आगे बढ़ने का प्रतीक हो, ज्ञान का प्रतीक हो, जो सत्य का प्रतीक हो - श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की गई। हम में से बहुत से लोग इस संसार में आये नहीं थे और जो थे उनमें से भी कईयों को इस घटना का पता भी नहीं चला। जिनको पता चला उनमें से कुछ ऐसे थे जो तनसिंह जी के साथ कंधे से कंधा मिला कर इस काम में लग गए। दृष्टिकोण की भिन्नता के कारण कुछ को यह काम ठीक नहीं लगा तो वे अलग रहे। सत्य एक ही होता है परंतु उसे देखने के दृष्टिकोण अनेक होते हैं। इसीलिए समर्थक भी होते हैं विरोधी भी होते हैं। जो इनकी परवाह करता है वह आगे नहीं चल सकता है। गुलाब के सुंदर फूल को प्राप्त करने के लिए काँटों में भी उलझना पड़ता है, संघ का काम भी ऐसा ही है। यह हमारे भीतर का युद्ध है। क्षत्रिय जाति को बाहर बहुत लड़ना पड़ा परन्तु बाहर वही जीत सकता है जो भीतर विजय प्राप्त कर ले। हमारे भीतर काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि शत्रु रहते हैं, जिन्हें हराना आवश्यक है। संगठन में शक्ति है परंतु बाहरी संगठन से पूर्व भीतरी संगठन आवश्यक है। देश में, संसार में संगठनों की कोई कमी नहीं है परंतु उनका लक्ष्य क्या है, यह महत्त्वपूर्ण है।

हमारा लाखों वर्षों का इतिहास रहा है जहां हमने स्वधर्म का पालन करते हुए संसार को राह दिखाई। विगत 5000 वर्षों से हम पतन की राह पर चल पड़े हैं और चलते जा रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

धौलासर से दुबई तक मनाया संघ स्थापना दिवस

सांणद

दिल्ली

मुम्बई

महोबा

(पृष्ठ एक से लगातार)

वह पीड़ा 22 दिसंबर, 1946 को श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में उत्पन्न हुई और जन-जन की पीड़ा बन गई। पूज्य श्री तन सिंह जी ने आज ही के दिन संघ की स्थापना की क्योंकि उन्हें यह आवश्यकता महसूस हुई कि मेरा समाज अपनी उपयोगिता खो चुका है। पूर्वजों की कमाई हम कब तक खायेंगे यदि हमने स्वयं उपार्जन करना शुरू नहीं किया तो, उसी थाती को पुनः प्राप्त करने के लिए संघ पिछले 73 वर्षों से कर्मशील है। यह तो युगों का कार्य है और इस महान कार्य को संयमी एंव सहनशील लोग ही कर पायेंगे। जिसमें इतना धैर्य है कि मैं जो कर रहा हूँ भले ही उसका परिणाम चार पीढ़ी बाद देखने को मिले, वे ही इस पथ पर निरन्तर गतिशील हैं। कार्यक्रम का संचालन प्रांत प्रमुख रेवत सिंह धीरा ने किया। कार्यक्रम में दिल्ली, उत्तर-प्रदेश एंव हरियाणा में रहने वाले समाज बंधु सम्मिलित हुए।

जैसलमेर स्थित संघ कार्यालय 'तनाश्रम' में वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह बेरसियाला की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित हुआ। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा समाज विगत 5000 वर्षों से पतन की ओर जा रहा है, उस पतन को रोककर पुनः ऊर्ध्वगति की साधना में समाज को नियोजित करने का कार्य संघ कर रहा है। हमारे उज्ज्वल भविष्य के निर्माण का मार्ग यहीं से निकलेगा। यह साधना का मार्ग है जिसमें कठोर अनुशासन का पालन करते हुए संघर्षो की अग्नि में तपना पड़ता है। कार्यक्रम को आईदान सिंह पूनमनगर ने भी संबोधित किया। जोगराज सिंह ने नववर्ष सन्देश का पठन किया। कार्यक्रम में शहर में रहने वाले समाजबंधु उपस्थित रहे। जैसलमेर के झिंझनियाली में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक रेमन्त सिंह झिंझनियाली उपस्थित रहे। छोटु सिंह झिंझनियाली ने नववर्ष सन्देश का वाचन किया। जैसलमेर शहर प्रांत के आकल गांव में भी स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में हिन्दू सिंह म्याजलार, दिलीप सिंह, सवाई सिंह, मदन सिंह, इंद्र सिंह आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में ग्रामवासियों के साथ बालिकाएं भी उपस्थित रहीं। जैसलमेर संभाग के ही चांधन प्रान्त में देवीकोट गांव के रूपादे पब्लिक स्कूल में स्थापना दिवस का कार्यक्रम वरिष्ठ स्वयंसेवक सांवल सिंह मोढ़ा की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। ऊगम सिंह लूना तथा गंगा सिंह बैरसियाला भी कार्यक्रम में उपस्थित रहें। रामगढ़ प्रांत के राघवा गांव में प्रांत प्रमुख पदम सिंह रामगढ़ की उपस्थिति में कार्यक्रम रखा गया। रामगढ़ प्रान्त के ही पारेवर गांव के शाखा मैदान में भी कार्यक्रम रखा गया जिसमें ग्रामवासियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। सवाई सिंह पारेवर ने उपस्थित समाजबंधुओं को संघ के विचारदर्शन व कार्यप्रणाली की जानकारी दी। जैसलमेर संभाग में ही म्याजलार प्रांत का कार्यक्रम म्याजलार में आयोजित हुआ। इसके अतिरिक्त जैसलमेर सम्भाग में इंद्रा कॉलोनी शाखा मैदान, मुलाना, खुहड़ी, बैरसियाला, रामगढ़, धौलासर आदि स्थानों पर भी कार्यक्रम आयोजित हुए।

इसी प्रकार मुम्बई प्रान्त के अंतर्गत मलाड में स्थापना दिवस वरिष्ठ स्वयंसेवक पाबूदानसिंह दौलतपुरा की उपस्थिति में मनाया गया, जिसमें शहर में रहने वाले सैकड़ो स्वयंसेवक व समाजबंधु सम्मिलित हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संभाग प्रमुख नीरसिंह सिंघाना ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी अभावों और संघर्षों में बड़े हुए, फिर भी उन्होंने अपनी प्रतिभा, ज्ञान और क्षमताओं का प्रयोग स्वयं के लिए सुविधाएं जुटाने में नहीं बल्कि समाज की सेवा में किया। समाज की पीड़ा से पीड़ित होकर ही उन्होंने 22 वर्ष की छोटी उम्र में श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनकी पीड़ा को पहचानें और समाज व मानवता के प्रति उनके स्वप्न को साकार करने में सहयोगी बने। कार्यक्रम को पूर्व विधायक राव रहाणे साहब, बैंक ऑफ इंडिया के महाप्रबंधक धर्मवीरसिंह भगतपुरा, चार्टर्ड अकाउंटेंट कुलदीप सिंह झाझड़ा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रांत प्रमुख रणजीतसिंह आलासन ने किया। कार्यक्रम के दौरान राजस्थान पत्रिका समूह की टीम द्वारा 'बेटियां हमारा गौरव है' विषय पर चर्चा का आयोजन भी किया गया। जेठूसिंह आकोली द्वारा उपस्थित समाजबंधुओं हेतु अल्पाहार की व्यवस्था की गई। सूरत में भी सारोली के वीर अभिमन्यु पार्क में स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें प्रान्त प्रमुख खेतसिंह चादेसरा उपस्थित रहे। उन्होंने उपस्थित स्वयंसेवकों से कहा कि संसार में विष तत्व के विनाश और अमृत तत्व की रक्षा का दायित्व क्षत्रिय को ईश्वर द्वारा आदिकाल से सौंपा गया है। क्षत्रिय ने इस दायित्व को निभाने के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने की परंपरा का निर्माण किया। किंतु विगत कुछ समय से विजातीय तत्वों के संपर्क में आकर क्षत्रिय अपना कर्त्तव्य भूलने लगा है। उसको पुनः याद दिलाने के लिए ही पूज्य तनसिंह जी ने संघ की स्थापना की।

इसी प्रकार बालोतरा संभाग में भी विभिन्न स्थानों पर स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुए। वीर दुगार्दास राजपूत हॉस्टल बालोतरा मे आयोजित समारोह में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक चन्दनसिंह चादेसरा ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ न केवल क्षत्रिय समाज के लिए संजीवनी बूटी है बल्कि संघ हर जाति व हर समाज सहित सम्पूर्ण राष्ट्र व मानवता के लिए हितकर है क्योंकि यह व्यक्ति, समाज व राष्ट्र मे फैली विकृतियों के निराकरण के लिए सतत प्रयासरत है। कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष भगवतसिंह जसोल, प्रांत प्रमुख राणसिंह टापरा, जालमसिंह वरिया व चन्दनसिंह थोब ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। पाटोदी के जवाहर राजपूत हास्टल में भी स्थापना दिवस मनाया गया। इस दौरान सोहनसिंह कालेवा, नगसिंह हडमतनगर, परमवीरसिंह ढेलाना उपस्थित रहे और छात्रावास में नियमित शाखा लगाने का संकल्प भी लिया। इसी प्रकार सिवाना में गुरु मंछ विद्यालय में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी उपस्थित रहे। उन्होनें पूज्य श्री तनसिंह जी के संदेश को घर घर तक पहुंचाने की बात कही। जसवंत सिंह देवंदी, गणपत सिंह गोलिया, प्रेम सिंह रानीगांव ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। सिवाना प्रान्त के ही कुण्डल गांव में भी सरोज बाल निकेतन विद्यालय में स्थापना दिवस वरिष्ठ स्वयंसेवक हनवंत सिंह मवड़ी की उपस्थिति में मनाया गया। उन्होंने उपस्थित समाजबंधुओं से कहा कि आज समाज को ही नहीं देश और सम्पूर्ण संसार को श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य की आवश्यकता है। पादरू में श्री जैतमाल राजपूत छात्रावास में भी समारोह पूर्वक स्थापना दिवस मनाया गया। यहां भी वरिष्ठ स्वयंसेवक हनवंतसिंह मवड़ी उपस्थित रहे। मातृशक्ति की भी कार्यक्रम में उपस्थिति रही। इसी प्रकार श्री हरिश्चन्द्र शाखा बालियाणा में भी हर्षोल्लास से स्थापना दिवस मनाया गया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

करड़ा (जालोर)

जोधपुर

चित्तौड़गढ

लक्ष्मणगढ़

चलेंगे तो मार्ग मिलता जाएगा : संघ प्रमुख श्री

आप सबकी सोच अच्छी है, अच्छा कर रहे हैं और अच्छा ही करेंगे। जो अच्छा करता है वह सर्वप्रिय बन जाता है। आप समाज के लिए कुछ अच्छा कर रहे हैं, इसमें किसी प्रकार की संकुचितता नहीं है इसलिए जारी रखें। आप सबने एक दीपक जलाया है, उससे मंजिल तो नहीं दिख रही लेकिन मंजिल की ओर जाने वाले मार्ग पर 10 कदम की दूरी प्रकाशित हो रही है। जब ये 10 कदम पार करेंगे तो अगले 10 कदम प्रकाशित होने लगेंगे इसलिए किसी प्रकार की हीन भावना न पालें, अपने आपको कोसें नहीं बल्कि अपने आपका सम्मान करें। जो अपना सम्मान करते हैं, समाज भी उनका सम्मान करता है। किसी प्रकार की हीन भावना न पालें, आप इतने सारे लोग समाज की पीड़ा से पीड़ित हैं, यह क्या कम है? यह पीड़ा ही क्रियाशील बनाएगी और मन में संकल्प जगेगा कि कोई करे या न करे मैं करूंगा। हर कार्य, हर संस्था, हर संगठन का प्रारम्भ एक व्यक्ति से ही होता है। हम अपने आप को भूल गए हैं, उस अपनेपन को याद करें। संसार करुण क्रंदन कर रहा है, उसे सुनने वाला क्षत्रिय होना चाहिए नहीं है तो बनना चाहिए, यही संकल्प श्री क्षत्रिय युवक संघ की प्रेरणा है।

संघशक्ति में संघ स्थापना दिवस की पूर्व संध्या (21 दिसम्बर) में आयोजित राजपूत अधिकारियों के स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि आप लोग अच्छे काम में प्रवृत्त हुए हैं, उसके लिए संघ अपनी शुभकामनाएं देता है। निरन्तर मिलते रहें एवं क्रियाशील बने रहें। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के तत्वावधान में आयोजित इस स्नेहमिलन में वर्तमान में प्रशिक्षु नए अधिकारियों के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में पदस्थापित वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल हुए। प्रारम्भ में माननीय महावीरसिंह सरवड़ी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देते हुए कहा कि संघ हमारे सात्विक सामाजिक भाव को जागृत करने में संलग्न है। यशवर्धनसिंह झेरली ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन का परिचय प्रस्तुत किया। राजस्थान परिवहन विभाग में उपायुक्त महेन्द्र प्रताप सिंह गिराब ने कहा कि दो वर्ष पूर्व ऐसी बैठक रखी तब सभी को अनेक बार फोन करने पड़े थे लेकिन इस बार केवल संदेश पाकर ही आप सब आए हैं यह हमारे सामाजिक भाव का प्रकटीकरण है। उन्होंने कहा कि हमारे सामने दो प्रश्न हैं जिन पर विचार करना है। पहला यह कि सरकारी सेवा में रहते हुए हमने कितने लोगों को इन सेवाओं की तरफ आकृष्ट किया एवं दूसरा है कि हमने हमारी क्षमताओं का समाज के लिए कैसे उपयोग किया। बालेसर एस.डी.एम. महावीरसिंह जोधा ने विगत 2 वर्षों से जोधपुर टीम द्वारा किए प्रयासों की जानकारी दी एवं भविष्य की योजनाओं के बारे में बताया। वरिष्ठ आर.ए.एस. राजेन्द्रसिंह शेखावत ने समाज की वर्तमान स्थिति में अधिकारियों की भूमिका के बारे में बताया।

उदयपुर में पदस्थापित आर.टी.ओ. प्रकाशसिंह भदरु ने कहा कि हमे दिखाने के लिए काम नहीं करना है बल्कि दायित्व समझकर करना है। हम तैयारी करने वाले एक-एक विद्यार्थी के मेंटर बनें एवं संभाले। वीरेन्द्रसिंह शेखावत आर.टी.एस. ने हर जिले में कर्मशील सहयोगियों की आवश्यकता जताई। सुमेरपुर एस.डी.एम. राजेन्द्रसिंह सिसोदिया ने कहा कि हम हमारे कार्यक्षेत्र में उन लोगों को ढूंढकर उनके वाजिब काम करें जिनकी हमारे तक पहुंच सहज नहीं है। हेमंतसिंह चुली ने कहा कि छोटी नौकरियां बड़ी नौकरी का मार्ग खोलती हैं इसलिए छोटी नौकरियों पर भी पूरा फोकस करें। नीतू कंवर राठौड़ ने बालिकाओं को प्राथमिकता से सहयोग का आह्वान किया एवं आनलाइन ट्यूटोरियल्स का पूरा उपयोग करने की बात कही। आर.पी.एस. राजकंवर शेखावत ने जरूरतमंद महिलाओं की काउंसलिंग करने की आवश्यकता जताई। नरपतसिंह हरसाणी ने सरकारी योजनाओं की जानकारी देने, जयपालसिंह जाखल ने अच्छे विद्यालयों में प्रवेश हेतु प्रयास करने, दिलीपसिंह राठौड़ ने राजपूत छात्रावासों को कार्यक्षेत्र बनाने की बात कही। वरिष्ठ अधिकारी विश्वजीतसिंह जाजली ने राजपूतों की निजी स्कूलों का सहयोग लेने की बात कही। गौरव बांकावत ने कहा कि राजपूत राजपूत का काम नहीं करता, इस छवि को सुधारने की आवश्यकता है। वरिष्ठ आई.आर.एस. राजेन्द्रसिंह आंतरी ने कहा कि जो परीक्षा सामने आ गई है उसके लिए शत प्रतिशत प्रयास किए जाने चाहिए। हम लोगों की छवि ऐसी है कि हम ज्यादा ढंग से सेवा दे सकते हैं, उस छवि को मजबूत करना चाहिए। औपचारिक बैठक के बाद सभी ने साथ भोजन किया। भोजनोपरांत बैठक में आए सुझावों पर विस्तार से अनौपचारिक चर्चा हुई। निम्न चार बिन्दु काम करने करने के लिए तय किए है- (1) पढ़ने वाले युवकों की कैरियर काउंसलिंग करना। (2) विभिन्न परीक्षाएं देने वाले युवकों का मार्गदर्शन करना। (3) आर्थिक सहयोग करने के लिए राशि जुटाना। (4) समाज के जरूरतमंद व्यक्ति को वैध काम में सहयोग के लिए सामूहिक प्रयास करना। इन सब बिन्दुओं पर सभी का समन्वय करने का दायित्व राजेन्द्रसिंह आंतरी, प्रकाशसिंह भदरु, महेन्द्र प्रतापसिंह, महावीरसिंह जोधा व विमलेन्द्रसिंह राणावत को सौंपा गया।

'कट्टरता आएगी तो जड़ता आएगी'

कट्टरता आएगी तो जड़ता आएगी, सोचने की शक्ति कुंद हो जाएगी, समाप्त हो जाएगी। इसलिए हम सेतु बनें, तोड़ने की अपेक्षा जोड़ने वाले बनें। मेरी समझ के अनुसार सभी का लक्ष्य परमेश्वर की छत्र छाया पाना है और इस लक्ष्य की ओर बढ़ना ही धर्म है। धर्म एक ही है, उपासना पद्धति अलग-अलग हो सकती हैं लेकिन वे धर्म नहीं हैं। ऋग्वेद ने कहा कि एक ही सत्य को विद्वानों ने अलग-अलग तरह से बताया और इसी कारण विभेद खड़ा हो गया। 15 दिसम्बर को 'संघशक्ति' में कायमखानी समाज के लोगों के साथ बैठक में माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हम आज दो से एक नहीं हो रहे हैं बल्कि अलग होने का जो भ्रम हुआ है उसे दूर कर रहे हैं। हमारी एकता के अनेकों उदाहरण हैं, अनेक जगह एक दूसरे के काम आए हैं लेकिन कालांतर में हम अपनेपन को भूल गए, उसे याद करने की आवश्यकता है। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि इसके लिए एकता को समझना पड़ेगा, हमें बदलना पड़ेगा। समाज को नहीं व्यक्ति को बदलना पड़ेगा क्यों कि संघ मानता है कि व्यक्ति बदलेगा तो समाज बदल जाएगा। इसीलिए संघ समाज सुधार की नहीं बल्कि व्यक्ति को बदलने की बात करता है। संघ किसी के विरुद्ध नहीं है, संघ अधिकार की नहीं बल्कि कर्तव्य की बात करता है। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वज अच्छे थे लेकिन उनकी कमाई कब तक खाएंगे। इतिहास प्रेरणा देता है लेकिन उस पर धैर्यपूर्वक चलना कठिन है। मोक्ष की चाह को छोड़कर भी जन्मों तक उस प्रेरणा का अनुसरण करने का संदेश पूज्य तनसिंह जी ने दिया है, संघ उसी संदेश का प्रसारक है। उन्होंने कहा कि भारत में इतनी उपासना पद्धतियां है ऐसे में मुसलमानों से क्या दिक्कत है? कायमखानी दोनों तरफ से सेतु बनें और इस संदेश को घर-घर तक पहुंचाने में सहयोग करें, तब बदलाव संभव है। संघ प्रमुख श्री के उद्बोधन से पूर्व कामयखानी समाज के खानुखान बुधवाली, जी.खान, लियाकत अली, सिकन्दर नियाजी आदि अनेक वक्ताओं ने अपनी बात कही। इन सबके उद्बोधन में निम्न बातें उभर कर आईं। राजपूतों और कायमखानियों का इतिहास एक रहा है। 250 वर्ष पूर्व कायमखानियों की नवाबी जाने के बाद राजपूतों ने हमारे साथ भाई जैसे संबंध रखे। हमारा इतिहास एक दूसरे की नई पीढ़ी की जानकारी में आना आवश्यक है इसलिए सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में छापा जाना चाहिए। इतिहास और सेना दोनों समाजों की साझा विरासत है। जब भी किसी कायमखानी को कोई राजपूत मिलता है तो अपना सा लगता है। हमें रक्त से राजपूत होने एवं धर्म से मुसलमान होने पर गर्व है। कायमखानी मुसलमानों में बड़े भाई की भूमिका निभा सकते हैं और राजपूतों के सगे भाई हैं। कौन हमारे बारे में क्या कह रहा है या क्या कर रहा है इस बारे में चिंतित होने की अपेक्षा हमें क्या करना है इस विषय पर सोचना चाहिए। अंत में सभी ने साथ भोजन किया। भोजनोपरांत माननीय संघ प्रमुख श्री ने सबको गीता भेंट की। वहीं कायमखानी बंधुओं ने माननीय संघ प्रमुख श्री, माननीय महावीर जी सरवड़ी एवं श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली को कुरान की प्रति भेंट की। बैठक का आयोजन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के तत्वावधान में किया गया।

पंथ या संप्रदाय... (पृष्ठ एक का शेष)

कलियुग का अभी केवल प्रारम्भ ही है, आगे और गिरावट आएगी पर गिरना हमारा लक्ष्य नहीं है। इस बहाव में स्वयं को खड़ा करना और अन्यों को बहने से रोकना, यह बहुत बड़ा काम है। भगवान श्रीकृष्ण ने द्वापर और कलियुग के संधिकाल में हमारे सामने अपने जीवन से आदर्श प्रस्तुत किया। आने वाले समय में मार्गदर्शन के लिए बीज रूप में गीता हमें प्रदान की। गीता के अनुसार हमारा स्वाभाविक कर्म ही हमारे लिए कल्याणकारी है। बिन्दु के सिन्धु में विलय का यही मार्ग है। यह बात सभी प्राणी नहीं समझते केवल मनुष्य ही समझता है। क्षत्रिय के घर में जन्म लेने के कारण क्षात्रधर्म-पालन हमारा स्वाभाविक कर्म है, हमारा स्वधर्म है, ईश्वर प्राप्ति का मार्ग है। परंतु ईश्वर को हम जैसे भूल गए हैं। साधन में उलझकर साध्य को भूल गए हैं। ईश्वर को हम बाहर ढूंढते है जबकि भगवान कहते हैं कि मैं प्रत्येक प्राणी के हृदय में अवस्थित हूँ, परंतु हम भगवान की बात नहीं मानते। हम यदि अपना ही इतिहास पढ़ लें, अपने जीवन का अवलोकन कर लें तो समझ आ जायेगा कि हमें भगवान वहीं लाया है जहां उसे लाना था। हम अपने प्रयत्न से नहीं पहुंचे हैं ईश्वर की इच्छा से पहुंचे हैं। इस बात को समझने के लिए सत्संग की, सत्कर्म की आवश्यकता है। सत्य, शिव और सुंदर की उपासना ही भगवान की उपासना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी ऐसा ही मार्ग है जो हमें स्वधर्म पालन द्वारा ईश्वर तक पहुंचाता है।

भगवान की दी हुई वस्तु का जो केवल अपने लिए उपयोग करता है, वह चोर है। इसलिए हमें जो मिला है उस पर केवल हमारा ही अधिकार नहीं है। आप जो कर्म करते है उसके लिए विचार कर लें कि क्या यह मेरे लिए हितकारी है? क्या यह मेरे परिवार के लिए हितकारी है? क्या यह मेरे समाज के लिए हितकारी है? क्या यह मेरे देश और संसार के लिए हितकारी है? केवल अपना ही हित सोच लें तो हम मानवता से गिर जाते हैं। अर्थ और काम की भी संसार को चलाने के लिए आवश्यकता है किंतु केवल उसी को पकड़ के रुकना नहीं है। अनासक्त होकर उसका उपयोग करना है। इस संसार से जो मिला है उसका सदुपयोग करना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की शिक्षा कोई अलग शिक्षा नहीं है, कोई पंथ नहीं है, कोई सम्प्रदाय नहीं है। यह भारतवर्ष के हमारे पूर्वजों की विरासत है, जो नष्ट हो रही है, उसी को बचाने का कार्य है। अभी हम कलियुग का रुख मोड़ नहीं सकते, परन्तु उसका मुकाबला कर सकते हैं, यह मुकाबला ही क्षात्रधर्म है। इस युद्ध में कभी पीछे नहीं हटना है। केवल अपने लिए न जीकर श्रेष्ठता की ओर बढ़ें। आत्यंतिक मुक्ति निश्चित है। जब कभी मनुष्य रूप में भगवान ने अवतार लिया है तो क्षत्रिय के घर में ही लिया है इसलिए स्वयं की महानता को पहचानें। आप यहां आए हैं तो आप जगे हुए हैं, इसीलिए आए हैं, अब सो मत जाना। परमेश्वर को भूलने से विकृतियां हमारे में प्रवेश करती हैं। आज हम देश में जो लड़ाई, संघर्ष, अव्यवस्था आदि देखते हैं उसका कारण ये विकृतियां ही हैं।

संघ का सिद्धांत है कि किए बिना कुछ होता नहीं है और दिए बिना कुछ मिलता नहीं है। संघ आपसे धन, संपदा नहीं मांगता, आपका समय मांगता है। समाज के लिए, ईश्वर के लिए आपका समय चाहिए। प्रतिदिन एक घंटा दें, प्रतिदिन न दे सकें तो सप्ताह में देवें। संघ आप में वह तेज पैदा करना चाहता है कि संसार आपके पीछे चलने लगे जाय। जो अपने लिए कुछ चाहता है वह समाज का काम नहीं कर सकता। जो स्वयं भीतर से संगठित नहीं है वह बाहरी संगठन का अंग भी नहीं बन सकता। हमारा संघर्ष अशांति से है, दुःख से है, विकृतियों से है। संसार में जो दुराचार हो रहा है उसके प्रति हमारे हृदय में पीड़ा जगे तब हम संघ के स्वयंसेवक बनते हैं। यह हमारी सत्ता के स्वामी की मांग है, इसे पूरा करना हमारा कर्त्तव्य है। लक्ष्य के प्रति अनन्यता के जिस भाव ने हमारे पूर्वजों को जौहर और शाकों की प्रेरणा दी, अनन्यता का वही भाव हमारे जीवन में भी उतर आये। संसार हमारी ओर देख रहा है। हम सन्मार्ग पर चलना शुरू कर दें, भगवान का सौंपा हुआ काम करना शुरू कर दें। भगवान को स्मरण रख कर जो काम हम करते हैं वह संघ का ही कार्य है, समाज और देश का ही कार्य है। आप चलना शुरू कर दें और सत्कर्म की ओर हमारे कदम बढ़ना प्रारम्भ हो जाय। चरैवेति चरैवेति।

जय संघ शक्ति।।

पत्रिका की चाय पर चर्चा

मुंबई में राजस्थान पत्रिका द्वारा संघ की भायंदर शाखा के स्वयंसेवकों के साथ 'चाय पर चर्चा' कार्यक्रम का आयोजन किया। चर्चा में शाखा के स्वयंसेवकों ने संस्कार निर्माण एवं भारतीयता की रक्षा में श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर चर्चा की।

श्री क्षत्रिय युवक संघ

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012 दूरभाष : 0141-2466353

E-Mail : sanghshakti@gmial.com

22 दिसम्बर 2019

संघ स्थापना दिवस

नववर्ष-सन्देश

प्रिय आत्मीय जन!

संघ की स्थापना 22 दिसम्बर 1946 को भारत वर्ष पर अंग्रेजी हुकुमत के समय हुई। गुलामी की बेड़ियां तोड़ डालने के लिए सौ वर्ष तक प्रयत्न होता रहा। अनेकों युवकों का बलिदान हुआ। अनेक माताओं ने अपने पुत्रों को खोया, अनेकों बहनों ने अपने भाई खोए, युवा पत्नियों ने अपने पति खोए। इतनी महंगी आजादी मिली। राष्ट्र ने स्वराज तो प्राप्त कर लिया, सुराज स्थापित करना राष्ट्र की आवश्यकता रही। सुराज की पीड़ा ही श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक 22 वर्षीय युवक श्री पूज्य तनसिंहजी की पीड़ा बनी और वह पीड़ा ही संघ की स्थापना का कारण बनी।

देश तो बिखरा हुआ था और क्षत्रिय समाज न केवल बिखरा हुआ था अपितु अपने जीवन के लक्ष्य और मार्ग को भूल चुका था। क्षत्रियों ने प्राचीन काल में भारत वर्ष को सुशासन दिया। देश और धर्म पर आने वाले संकट को अपने ऊपर लेना उनका प्रिय व उपास्य विषय रहा। बदलते युग में धीरे-धीरे क्षत्रिय अपने लक्ष्य व धर्म के मार्ग से च्युत हो गए। देश की आजादी तक गुलामी के कारण देश और क्षत्रिय समाज का आचरण मानवीय मूल्यों से दूर हो गया। क्षत्रिय अपने अहंकार, अपनी जातीय श्रेष्ठता का अभिमान, स्वार्थ, लोभ, ईर्ष्या से रोगग्रस्त हो चुका था।

संघ ने क्षत्रियों को अपने श्रेष्ठ आचरण की ओर अग्रसर कराया। क्षत्रिय समाज में भी समाज सुधार के लिए कतिपय अन्य संस्थाएं बनने लगीं। किन्तु व्यक्ति निर्माण के बिना न तो राष्ट्र निर्माण सम्भव होता है न समाज निर्माण ही। इस सत्य को गौण मान केवल समाज सुधार का प्रयत्न होने लगा। उन संस्थाओं की भावना पर कोई संदेह नहीं। संघ ने व्यक्ति के निर्माण के लिए युवकों को चरित्रवान व संस्कारित बनाने के संकल्प के साथ अभ्यास प्रारम्भ किया। निरन्तर और नियमित अभ्यास के बिना न चरित्र निर्माण संभव और न संस्कार निर्माण। सुसुप्त समाज में जड़ता ने घर कर लिया था। विष और अमृत का संघर्ष आदिकाल से चला आ रहा है जो अब भी जारी है और संघ स्थापना के तुरन्त बाद से ही असहमतियां होने लगीं - टूटन होने लगी। आज तक यह चल रही है। संघ न तो थका और न रुका, सतत् कर्म में लगा रहा तो समाज में जड़ता दूर हुई, जागृति होने लगी। संघ का संदेश दूर-दूर तक प्रसारित होने लगा। मरुधरा में संघ का कमल खिला फिर गुजरात में खिला, फिर देश के सुदूर प्रदेशों में पहुंचा। बालिकाओं और महिलाओं में स्वतंत्र रूप से अभ्यास चलने लगा। आज देश के अतिरिक्त विदेशों तक संदेश पहुंचने लगा है, वहां जागृति हो चली। विरोध बाहर और भीतर आज भी चल रहा है जिसकी कोई गिला नहीं। समाज के कर्मशील युवक-युवतियां संघ से जुड़ना चाहते हैं, ऐसे में जिन युवक-युवतियों ने अपने आपका निर्माण किया है, संस्कारित हुए हैं वे ही इस काम का विस्तार कर पाए हैं। हमारी क्षमताओं से अधिक कार्य विस्तार की मांग बढ़ने लगी है। जो लोग अछूते रह गए वो भी आ आकर मिल रहे हैं। लगता है पूरा समाज उठ खड़ा हो गया है। अब इन्हीं जागृत और चल पड़ने की कटिबद्ध युवक-युवतियों के कंधों पर पूरे राष्ट्र का उत्तरदायित्व भी आने वाला है।

उधर पूरे देश में सदाचरण का इतना अभाव हो गया है कि अत्याचार, भ्रष्टाचार, दुराचार, बलात्कार अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया है। भारत सरकार व राज्य की सरकारों से देश संभल नहीं रहा है। क्यों कि शासन करने वाले ही भ्रष्ट और आचरणहीन हो जाएं तो समाज को कौन संभाले? धर्म की परिभाषा बदल गई तो उसकी पुनर्स्थापना और रक्षा कौन करे? धर्महीन देश को पतित होने से कौन बचाए? विकास की परिभाषा बदल गई तो विकास होगा कैसे? विश्वगुरु भारत वर्ष आज सब कुछ भूल गया है और अन्यान्य देशों की ओर आकृष्ट होकर विनाशकारी होड़ में लग गया है। कौन मित्र है कौन शत्रु, इसकी पहिचान खो गई है। अपने गुरुत्व को भूल हीनग्रन्थी से ग्रस्त होकर निरर्थक चेष्टाएं कर रहा है। ऐसे में इस देश को सुशासन देने वाले क्षत्रियों को ही यह कार्य अपने कंधों पर लेना होगा। हनुमान की भांति अपनी शक्ति पर विश्वास और श्रद्धा करनी होगी। हम सक्षम हैं, हममें सम्पूर्ण संभावनाएं हैं यह स्मरण रखना होगा। मानवता त्रस्त होकर कराह रही है, करुण क्रन्दन कर रही है। हमें उद्घोष करना होगा कि हे भारत माता! तुम्हारे आंखों में आंसुओं की धार नहीं मुस्कराहट भरने वाले तुम्हारे उत्साही सपूत बस आ ही रहे हैं। थोड़ी देर तो हो गई। परन्तु देश, समाज और मानवता के बुरे दिनों का अन्त आने वाला है, नवप्रभात होने वाला है। भगवान का गीतोक्त संदेश - 'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय।' का स्मरण कर लाभ हानि की चिन्ता छोड़ कर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में उतरकर पूर्वजों की भांति यशस्वी बनना ही होगा। मेरे प्रिय बन्धुओं और भगिनियो! इस विश्वास के साथ हम संघ के नववर्ष का स्वागत कर इस धरती पर स्वर्ग उतार लाने के लिए कटिबद्ध हो जाएं। एक मात्र ईश्वर के अतिरिक्त किसी के समक्ष झुकेंगे नहीं और पूरे विश्व में सुख और शांति का बिगुल बजा देना है।

बस यही। जय संघशक्ति!

आपका

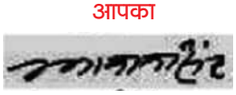

(भगवानसिंह), संघ प्रमुख

मारवाड़ राजपूत सभा का शपथ ग्रहण

मारवाड़ राजपूत सभा की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत के मुख्य आतिथ्य एवं पूर्व महाराजा गजसिंह की अध्यक्षता में 22 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें 426 प्रतिभाएं सम्मानित हुईं। समारोह को संबोधित करते हुए केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह ने कहा कि हम जहां भी रहें, हमारा सामाजिक भाव जीवित रहना चाहिए। समाज को परिवार मानकर उसकी सेवा में संलग्न होना चाहिए। उन्होंने युवाओं का उचित मार्गदर्शन एवं स्किल डवलपमेंट के विषय में कार्य करने की आवश्यकता जताई। समारोह अध्यक्ष पूर्व महाराजा गजसिंह ने कहा कि समाज के युवा कड़ी मेहनत कर व्यवस्था में अपना स्थान बना रहे हैं लेकिन एक वर्ग अभी भी अछूता है। उन तक पहुंच कर उन्हें भी मुख्य धारा में लाया जाना चाहिए। पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव ने राजपूत शिक्षा कोष के बारे में जानकारी दी। समारोह में उपस्थित समाज बंधुओं ने शिक्षा नेग का अनुमोदन करते हुए पारिवारिक समारोहों के अवसर पर शिक्षा के लिए सहयोग करने की परम्परा का अनुमोदन किया। शेरगढ़ विधायक मीना कंवर ने प्रतिभाओं के प्रोत्साहन के लिए सम्मान की परम्परा को अच्छा बताया। संत समताराम ने संस्कृति का पालन करने एवं संत अचलानंद ने नशा मुक्ति की बात कही। छात्र संघ अध्यक्ष रविन्द्रसिंह भाटी ने समाज की प्रतिभाओं को आगे बढ़ने में सहयोग की आवश्यकता जताई। नवनिर्वाचित सभा अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा ने उनके तीसरी बार निर्वाचन के लिए सबका आभार जताया।

कार्य विभाजन किया, कार्य योजना बनाई

माननीय संघ प्रमुख श्री द्वारा नव नियुक्त श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय टीम की प्रथम बैठक 26 दिसम्बर को केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में आयोजित हुई जिसमें कार्य विभाजन किया गया एवं आगामी 6 माह की कार्य योजना बनाई गई। अब तक बनी टीमों के साथ समन्वय स्थापित कर फाउण्डेशन के उद्देश्यों पर क्रियाशील बनाए रखने के लिए दायित्व विभाजन किया गया। सीकर, जयपुर व भीलवाड़ा टीम के समन्वय का दायित्व श्रवणसिंह बगड़ी को, बीकानेर, जोधपुर व पाली टीम के समन्वय का दायित्व रामसिंह चरकड़ा को, बाड़मेर, जैसलमेर, जालोर, सिरोही टीमों से समन्वय का दायित्व आजादसिंह शिवकर को व नागौर टीम का दायित्व अरविन्दसिंह बालवा को दिया गया। शेष जिलों में विस्तार की योजना बनाई गई एवं इसके लिए श्रवणसिंह बगड़ी को समन्वय व संयोजक का सहयोगी बनाया गया। सोशल मीडिया के संबंधित कार्य का दायित्व अरविन्दसिंह बालवा व छात्र नेताओं से संबंधित कार्य रामसिंह चरकड़ा को सौंपा गया। स्थानीय टीमों के सहयोग से संघ प्रमुख श्री के प्रवास के दौरान संबंधित स्थानों पर विभिन्न समाजों की सद्भावना बैठकें करने का निर्णय किया गया। इसके तहत कायमखानी समाज की एक बड़ी बैठक जयपुर में करने का निर्णय लिया। दलित संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ भी जयपुर में एक बैठक करने का निर्णय हुआ। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में रोजगार की संभावना के सदुपयोग के लिए टेक्नोक्रेट्स की एक बैठक रखने, हारे हुए विधायक प्रत्याशियों एवं आगामी पंचायत चुनावों में विजयी समाज बंधुओं की भी एक बैठक करने का निर्णय लिया। जिला स्तर पर 25-45 वर्ष के युवा राजनीतिक कार्यकर्ताओं की भी बैठकें करने का निर्णय लिया गया। संवैधानिक साधनों के प्रति समाज को जागरुक करने वाले सहयोगी तैयार करने के लिए केन्द्रीय स्तर पर एक कार्यशाला भी रखने का निर्णय हुआ। साथ ही सरकारी योजनाओं की जानकारी अधिकतम समाज बंधुओं तक पहुंचाने के लिए डेमो वीडियो बनाकर सोशल मीडिया के माध्यम से प्रसारित करने की योजना पर भी चर्चा की गई। फाउण्डेशन से जुड़ने के इच्छुक युवाओं का विवरण जुटाने के लिए एक वाट्सएप नंबर जारी करने को लेकर भी विचार किया गया। समन्वयक एवं संयोजक को उपर्युक्त सभी कामों का समन्वय करने का दायित्व दिया गया। इससे पूर्व 25 जनवरी को नागौर व बीकानेर टीम तथा 26 जनवरी को सीकर व जयपुर टीम की समीक्षा बैठक रखी गई। इन बैठकों में तहसील स्तरीय बैठक करने, पटवारी व कांस्टेबल की तैयारी कर रहे समाज बंधुओं का सहयोग करने, स्थानीय राजपूत कर्मचारियों की बैठकें आयोजित करने व एक-एक युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशाला आयोजित करने का दायित्व दिया गया।

भाजपा के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष (नागौर देहात) गजेन्द्रसिंह ओडिंट व नागौर से भाजपा की प्रदेश प्रतिनिधि चन्द्रप्रभा कंवर डाबड़ा 27 दिसम्बर को माननीय संघ प्रमुख श्री से आशीर्वाद लेने पहुंचे।

मेवाड़ वागड़ व मालवा की त्रैमासिक बैठक

संघ के मेवाड़ मालवा व मेवाड़ वागड़ संभागों की त्रैमासिक बैठक 14 व 15 दिसम्बर को संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकावास के सानिध्य में संपन्न हुई। बैठक में दोनों संभाग प्रमुखों व स्थानीय स्वयंसेवकों के साथ-साथ केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ व गंगासिंह साजियाली भी उपस्थित रहे। बैठक में विगत बैठक में लिए गए लक्ष्यों की उपलब्धि की समीक्षा की गई एवं आगामी तीन माह की कार्ययोजना बनाई गई। पूज्य आयुवानसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष के तहत किए जाने वाले कार्यक्रमों की रुपरेखा बनी एवं संघ के प्रशिक्षण शिविर के लिए योग्य स्वयंसेवकों की सूची बनाकर उनसे सम्पर्क के दायित्व दिए गए। संघशक्ति, पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता के त्रैमासिक लक्ष्य लिए गए। प्रांत प्रमुखों से आज की बैठक में तय किए गए लक्ष्यों की मासिक समीक्षा करने को कहा गया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha,
Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super
Specialized
Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

धौलासर से दुबई तक मनाया संघ स्थापना दिवस

चौहटन

बैंगलोर

धानेरा

बड़ागुड़ा (पाली)

(पृष्ठ दो से लगातार)

चान्देसरा (बायतु) की हमीरपुरा शाखा में भी कार्यक्रम रखा गया। गिड़ा में भी शाखा स्तर पर संघ का स्थापना दिवस कार्यक्रम मनाया गया। नोसर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। कल्याणपुर में थोब स्थित मामाजी बावजी के थान पर स्थापना दिवस मनाया गया।

जालोर संभाग में सांचोर के तेतरोल गांव में स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने कहा कि संघ विगत 73वर्षों से समाज को अपना आराध्य मानकर उसकी सेवा में संलग्न है। संघ मार्ग पर चलकर हम भी अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं। चंदनसिंह विरोल, हिन्दूसिंह दूठवा, महेन्द्र सिंह झाब ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन महेन्द्र सिंह कारोला ने किया। इसी प्रकार पांचोटा स्थित नागणेशी मन्दिर के प्रांगण में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें आस पास के गांवों से समाजबंधुओं तथा मातृशक्ति की उपस्थिति रही। कार्यक्रम को खुमानसिंह दुदिया, वीर बहादुरसिंह असाड़ा, डॉ गणपतसिंह सराणा तथा जब्बरसिंह राठौड़ ने संबोधित किया। सायला के श्री जलंधरनाथ राजपूत छात्रावास में प्रान्त प्रमुख नाहरसिंह जाखड़ी की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस दौरान जिला परिषद सदस्य मंगल सिंह सिराणा भी उपस्थित रहे। पाली शहर में इंदिरा कॉलोनी स्थित वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। उपस्थित समाजबंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देते हुए केंद्रीय शाखा प्रभारी महेन्द्र सिंह गुजरावास ने कहा कि संघ की शाखा व शिविरों के द्वारा बालक के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होता है, साथ ही वह समाज व राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व का भी अनुभव करता है। प्रांतप्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जालोर संभाग के सिरोही प्रांत के नारादरा गांव में भी स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम को प्रांत प्रमुख सुमेर सिंह उथमण, राजेन्द्र सिंह नारादरा, सूर्यपालसिंह चूरा, गौतमकंवर नारादरा, बालूकंवर माँडाणी व दिलिप सिंह माँडाणी ने संबोधित किया। नारायण सिंह खंदरा ने संघ परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन अमरसिंह चांदणा ने किया। जालोर की श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की टीम ने भीनमाल के निकट करड़ा गांव में स्थापना दिवस मनाया जिसमें उपस्थित समाज बंधुओं से संघ एवं फाउंडेशन बाबत चर्चा हुई।

गुजरात के महेसाना प्रांत के करली गांव में स्थापना दिवस मनाया गया। करली गांव में बहुत लंबे अंतराल के बाद संघ का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस दौरान करली, नंदाली, पल्ली, महेसाना, भेंसाना, जासका, जेतलवासना, करणपुर, वसाई, डभाला, समऊ, पडूसमा सहित 17 गांवों से सैकड़ों समाजबंधु उपस्थित रहे। वरिष्ठ स्वयंसेवक विक्रमसिंह कमाना ने सभी को संघ के उद्देश्य तथा कार्यप्रणाली से परिचित कराया। कार्यक्रम का संचालन रणजीत सिंह नंदाली ने किया। वनराज सिंह भेंसाना, इंद्रजीत सिंह जेतलवासना, पृथ्वी सिंह करली, मनुसिंह करली ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। बनासकांठा प्रान्त में भी विभिन्न स्थानों पर स्थापना दिवस मनाया गया। प्रान्त के चारों मंडलों में कार्यक्रम आयोजित हुए। तनसिंह मंडल का कार्यक्रम जागृति विद्यालय, पीलुडा में आयोजित हुआ। आयुवानसिंह मंडल का कार्यक्रम महाराणा प्रताप होस्टल दियोदर में, नारायणसिंह मंडल का कार्यक्रम नेशनल हाईस्कूल धानेरा में तथा हरि सिंह मंडल का कार्यक्रम राजपूत महोल्ले कोदराम में आयोजित हुआ। सभी कार्यक्रमों में बडी संख्या में क्षत्रिय बन्धु एवं बालिकाएँ उपस्थित रहे। पीलुडा बैठक में हीरसिंह जाडी, दियोदर बैठक में मनदीपसिंह माडका तथा कोदराम एवं धानेरा बैठक में अजितसिंह कुणघेर उपस्थित रहे। गुजरात के सांणद के वाघेला राजपूत छात्रावास में रखे गए कार्यक्रम में पायल कंवर लिबुणी ने संघ का परिचय दिया व जगतसिंह वलासणा ने नववर्ष संदेश का पठन किया। उद्योगपति भानुविजय सिंह खोड़ा, ईश्वरसिंह ढीमा व पुलिस अधीक्षक भागीरथ सिंह लुणीवाव ने संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली को क्षत्रियत्व की ओर लौटने का एकमात्र माध्यम बताया। वरिष्ठ स्वयंसेवक सहदेवसिंह मूली ने सांघिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। मेवाड़ मालवा संभाग में चित्तौड़गढ़ के भूपाल राजपूत छात्रालय परिसर में भी स्थापना दिवस समारोह हर्षोल्लास से मनाया गया। सम्भाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने अपने उद्बोधन में कहा कि क्षत्रिय धर्म एवं संस्कृति की रक्षा करने का एकमात्र उपाय श्री क्षत्रिय युवक संघ है। कार्यक्रम को लोकेन्द्र सिंह ज्ञानगढ़, मीना कंवर सहाड़ा, जोहरस्मृति संस्थान के अध्यक्ष तखतसिंह फाचर, कोषाध्यक्ष नरपत सिंह भाटी, पूर्व प्रधान शक्ति सिंह मुरलिया, लक्ष्मण सिंह बड़ोली, बालू सिंह जगपुरा ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन नरेंद्र सिंह नरधारी ने किया। महाराणा कुम्भा छात्रावास भीलवाड़ा में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। यहां भी संभाग प्रमुख बृजराजसिंह खारड़ा उपस्थित रहे। इसी प्रकार डूंगरपुर जिले में श्री रणछोड़राय मंदिर मोटागाँव में भी स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में वागड़ क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंह आनंदपुरी, पृथ्वीराज सिंह मोटागांव, गुमान सिंह वलाई, अरविंद सिंह गेहूवाड़ा, दिग्विजयसिंह लाम्बापाड़ा, हनुमंत सिंह सज्जन सिंह का गड़ा, जय गिरिराज सिंह बांसवाड़ा ने संघ के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन टैंक बहादुर सिंह गेहूवाड़ा ने किया। उदयपुर में प्रताप चौक भूपाल नोबल्स उच्च माध्यमिक विद्यालय में संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला की उपस्थिति में स्थापना दिवस मनाया गया। दक्षिण भारत में केरल के तिरुवनंतपुरम में भी स्वयंसेवकों द्वारा संघ का स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में पृथ्वी सिंह उतराबा, प्रभुदान चारण आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। महावीर सिंह कावतरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। आंध्रप्रदेश के राजमहेन्द्रवरम में स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान जनक सिंह देता, विक्रम सिंह मांडवला, महेंद्र सिंह आहोर आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन जोगेंद्र सिंह दुदवा ने किया। कर्नाटक में बेंगलुरु के राणा सिंह पेट स्थित राजपूत समाज भवन में भी स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में राजपूत समाज कर्नाटका के अध्यक्ष मनोहर सिंह राजोला, पूर्व अध्यक्ष गायड सिंह व देवेंद्र प्रताप सिंह वाडिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संघ कार्य की समाज में परम आवश्यकता बताई। जोधपुर शहर स्थित श्री हनवन्त राजपूत छात्रावास में स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकर सिंह महरोली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि संघ सेवा का मार्ग है। यहाँ स्वयं का सुख नहीं अपितु समाज और प्राणिमात्र का कल्याण ही लक्ष्य है। पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान छात्रावास वार्डन गजेसिंह गंठीया, मोहनसिंह खिरंजा, भैरुसिँह बेलवा, मोहनसिंह गंगासरा, लूणकरनसिंह तेना, शिवपालसिंह बस्तवा, मोतीसिंह फलसूंड, गुलाबसिंह बेदू सहित लगभग 170 की संख्या में शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व छात्रावास बंधु उपस्थित थे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

मोटागांव (डूंगरपुर)

तेतरोल (जालोर)

बाड़मेर

सूरत

धौलासर से दुबई तक मनाया संघ स्थापना दिवस

(पृष्ठ 6 से लगातार)

नागौर संभाग के कुचामन प्रान्त में संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन (कुचामन सिटी) तथा माताजी मंदिर कांकरिया कॉलोनी में उत्साह पूर्वक संघ का स्थापना दिवस मनाया गया। आयुवान निकेतन में हुए कार्यक्रम में साधना संगम संस्थान के उपाध्यक्ष भगवत सिंह सिंघाना ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य की वर्तमान समय में आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि संघ पथ पर बढ़कर हमें राष्ट्र को मजबूत बनाना है। इसके लिए हमें हमारे इतिहास से प्रेरणा लेकर पूज्य श्री तन सिंह जी, पूज्य श्री आयुवान सिंह जी व पूज्य श्री नारायण सिंह जी के बताए मार्ग पर चलना है। कार्यक्रम का संचालन संभाग प्रमुख शिंभु सिंह आसरवा ने किया। कांकरिया कॉलोनी में हुए कार्यक्रम में संभाग प्रमुख शिंभु सिंह आसरवा ने कहा कि संघ पिछले 73 वर्षों से संस्कार निर्माण का कार्य कर रहा है। कार्य बहुत कठिन है, क्षेत्र बहुत विशाल है पर फिर भी संघ इस कार्य को अनवरत ध्येय निष्ठा के साथ कर रहा है। शिक्षाविद् गिरधारी सिंह चितावा ने वीर दुगार्दास जी के चरित्र से सीख लेकर संघ कार्य को करने में जुट जाने का आह्वान किया।

बाड़मेर संभाग के गुडामालानी प्रांत के उण्डखा गांव के जोगमाया मंदिर परिसर में कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख गणपत सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक महिपाल सिंह चूली ने कहा कि व्यक्तिगत निर्माण से ही समाज व राष्ट्र निर्माण संभव है जिसके लिए हम स्वयं अपने आप को पहचानें, समझें कि मैं कौन हूं, क्या मेरा कर्तव्य कर्म है? व्यक्तिगत निर्माण के बिना समाज सुधार या राष्ट्र निर्माण की बात करना निरर्थक है। कार्यक्रम में मलसिंह उण्डखा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इसी प्रकार गुड़ामालानी के संस्कार धाम छात्रावास में स्थापना दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में गुरुकुल हॉस्टल, परमहंस हॉस्टल और संस्कार धाम हॉस्टल के विद्यार्थी सम्मिलित हुए। शिव प्रान्त में भिंयाड़ स्थित नागाणाराय मंदिर के प्रांगण में भी स्थापना दिवस मनाया गया। इसी प्रकार चोचरा गांव में पाबूजी के प्राचीन मन्दिर में जीत विद्यालय द्वारा स्थापना दिवस मनाया गया। इस दौरान देरावर सिंह, भेरू सिंह, डूंगर दान ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन पारस सिंह ने किया। इसी प्रकार दौसा जिले के लुनियावास एवं बाढमोचिंग पुरा में संघ का स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। दौसा प्रान्त प्रमुख मदन सिंह बामणिया ने संघ के उद्देश्य, विचारदर्शन, कार्यप्रणाली के विषय में उपस्थित समाजबंधुओं को जानकारी दी। लोकेन्द्र सिंह मलारना ने आज के युग मे संघ कार्य की आवश्यकता के बारे में बताया। कार्यक्रम के दौरान मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। उत्तरप्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में महोबा में स्थापना दिवस मनाया गया जहां जयपुर संभाग प्रमुख राजेन्द्रसिंह बोबासर ने संघ की जानकारी दी। प्रांत प्रमुख जितेन्द्रसिंह ने कहा कि स्थानीय सहयोगियों एवं स्वयंसेवकों सहित घर-घर घूमकर संघ बाबत जानकारी दी व स्थापना दिवस पर आमंत्रित किया।

इसके अतिरिक्त बालिका शिविर पिपलिया मंडी जिला मन्दसौर (म.प्र.), करणी शाखा किरतासर (नोखा) बीकानेर, श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस चौहटन, पद्मिनी बालिका शाखा सूरत, नारायण निकेतन (बीकानेर), झंझेऊ (बीकानेर), पुणे, गुगरियाली (नागौर), अमर राजपूत छात्रावास नागौर, छापडा शाखा (नागौर), पांचोडी (नागौर), चारभुजा राजपूत छात्रावास मेडता, मेघाणी नगर (अहमदाबाद), पोकरण, नाचना, जय भवानी नगर (जोधपुर), बापिणी, ओसियां, सेतरावा, जेठानियाँ, पदमिनी बालिका छात्रावास नाथावतपुरा, श्री करणी राजपूत छात्रावास नोखा, करड़ा, लाडनूं, बड़ा गुड़ा (पाली), अवाणिया (भावनगर), शीषाग (राजकोट), गोंडल (राजकोट), मेजर शैतान सिंह राजपूत छात्रावास फलोदी, बाप, शाखा मैदान बामणू, वीरमदेव राजपूत छात्रावास जालोर, श्री मल्लीनाथ राजपूत छात्रावास बाड़मेर, भोजराज की ढ़ाणी रामगढ़, गंगासरा, सेक्टर 7 (गांधीनगर), रंगपुर (गांधीनगर), आशापुरा शाखा (बीकानेर), आर डी 465 छतरगढ़ (बीकानेर), राजपूत छात्रावास वल्लभीपुर में भी स्थापना दिवस के उपलक्ष में कार्यक्रम आयोजित हुए। भारत से बाहर दुबई में भी स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं द्वारा स्थापना दिवस मनाया गया।

माननीय संघप्रमुख श्री के निदेर्शानुसार यह वर्ष संघ के द्वितीय संघप्रमुख श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील के जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है, अतः स्थापना दिवस पर आयोजित सभी कार्यक्रमों में भी सम्मानीय माड़साब को स्मरण किया गया।

'समाज की आवश्यकता पूरी करता है संघ'

पूज्य तनसिंह जी ने आजादी से पूर्व समाज की आवश्यकता समझी एवं उसके लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। विगत 73 वर्षों से संघ उनकी चाह के अनुरूप समाज की आवश्यकता के अनुरूप क्रियाशील है। राजनीति में समाज की उपस्थिति को प्रबल बनाने एवं राजनीतिज्ञों को समाज के व समाज को राजनीतिज्ञों के अनुकूल बनाने की आवश्यकता महसूस हुई तो संघ ने श्री प्रताप फाउंडेशन के रूप में काम किया। आज युवा वर्ग की नकारात्मकता को दूर कर उनके सामाजिक भाव का सकारात्मक उपयोग करने के लिए श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन बनाया है। डीडवाना में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन की तहसील स्तरीय बैठक को संबोधित करते हुए विगत विधानसभा चुनावों में डीडवाना से भाजपा प्रत्याशी रहे जितेन्द्रसिंह सांवराद ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक गांव में माननीय संघ प्रमुख श्री के इस संदेश को ले जाने के लिए हम टीम के रूप में काम करेंगे। बैठक में फाउण्डेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली ने उद्देश्यों एवं अब तक हुए काम के बारे में जानकारी दी। संचालन करते हुए केन्द्रीय टीम सदस्य अरविन्द सिंह बालवा ने फाउण्डेशन की स्थापना की भूमिका की जानकारी दी। सुरेन्द्र प्रतापसिंह थेबड़ी ने कहा कि हमारे सामाजिक भाव का सदुपयोग हो इसके लिए उचित मार्गदर्शन आवश्यक है। इसके लिए हमे फाउण्डेशन से जुड़ना चाहिए। बैठक में हुई अनौपचारिक चर्चा के दौरान डीडवाना के विभिन्न गांवों में बैठकें करने की योजना बनी। प्रारम्भ में 8 स्थान चिह्नित किए गए एवं उसके लिए जिम्मेदारी तय की गई। पटवारी एवं कांस्टेबल की विज्ञप्ति में अधिकतम लोगों के फार्म भरवाने एवं उनको नौकरी में सहयोग करने के लिए प्रदेश स्तर पर चल रहे अभियान में सहयोगी बनने का भी निर्णय हुआ। स्थानीय कर्मचारियों का इसके लिए सहयोग लेने के लिए कर्मचारियों की बैठक करने की भी चर्चा की गई।

वीर अमरसिंह राठौड़ की जयंती पर प्रतिभा सम्मान

डीडवाना (नागौर) के निकट स्थित सेवा नाथूसर में 12 दिसम्बर को वीर अमरसिंह राठौड़ की 406वीं जयंती के उपलक्ष में प्रतिभा सम्मान समारोह रखा गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में सेवा गांव का नाम रोशन करने वाली 100 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। जितेन्द्रसिंह सांवराद ने इस अवसर पर महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। जालोर के महिला थाने की एस.एच.ओ. एवं सेवा की निवासी निर्मला कंवर ने महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की बात कही।

दीपेन्द्रसिंह को स्वर्ण पदक

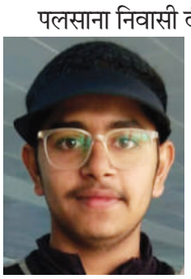

पलसाना निवासी दीपेन्द्रसिंह पुत्र राजेन्द्रसिंह ने भोपाल में आयोजित 63वीं राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में 50 मीटर राइफल मैन सिविलियन इवेंट में स्वर्ण, 50 मीटर राइफल जुनियर सिविलियन टीम में कांस्य, 50 मीटर जुनियर सिविलियन (राइफल) में कांस्य तथा 10 मीटर एयर राइफल युवा वर्ग में कांस्य पदक हासिल किए। दीपेन्द्र का खेलों इंडिया योजना में चयन हो चुका है एवं इन्होंने तैराकी प्रतियोगिताओं में भी कई पदक जीते हैं।

देवीसिंह तेजमालता को स्वर्ण पदक

भारतीय शांति खेल व शिक्षा परिषद की ओर से आयोजित इंडो नेपाल टूर्नामेंट में संघ के स्वयंसेवक देवीसिंह तेजलमालता ने 200 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक हासिल किया है।

संवाद एवं मार्गदर्शन

उड़ीसा में पद स्थापित भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी चक्रवर्ती सिंह राठौड़ ने अपने जोधपुर प्रवास के दौरान मारवाड़ राजपूत सभा भवन जोधपुर में 25 दिसम्बर को आयोजित संवाद एवं मार्गदर्शन कार्यशाला में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं का मार्गदर्शन किया। संघ लोक सेवा की प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार के संबंध में उपयोगी जानकारी एवं टिप्स साझा की। राजपूत प्रशासनिक अधिकारियों की जोधपुर टीम द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में महावीरसिंह जोधा उपखण्ड अधिकारी बालेसर, वीरेन्द्रसिंह शेखावत आर.टी.एस., कर्नल नारायणसिंह बेलवा एवं हनुमानसिंह खांगटा उपस्थित रहे।

संघर्ष के समकालीन साधन

10/- रुपए में राज करने का अधिकार - सूचना का अधिकार

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 (आर.आई.टी. एक्ट-2005)

सूचना का अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत किसी भी सरकारी कार्यालय का निरीक्षण किया जा सकता है।

निरीक्षण हेतु आवेदन (कलक्टर कार्यालय)

श्रीमान लोक सूचना अधिकारी एवं
अति. जिला कलक्टर, जयपुर (राज.)

विषय : सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अन्तर्गत मैं आपके कार्यालय से संबंधित निम्न दस्तावेजों/पत्रावली का निरीक्षण करना चाहता हूं।

- आपके कार्यालय व जिला कलक्टर कार्यालय का माह नवम्बर, दिसम्बर 2009 का भौतिक और वित्तीय मासिक प्रगति प्रतिवेदन (एम.पी.आर.) से संबंधित/दस्तावेज/पत्रावली।
- आप व श्रीमान जिला कलक्टर द्वारा माह नवम्बर 2019 महीने में किए गए दौरों का प्रतिवेदन। (विजीट रिपोर्ट)।
- आपके कार्यालय व जिला कलक्टर कार्यालय में सम्पूर्ण लम्बित राजस्व प्रकरणों की सूची, विवरण।
- आप व श्रीमान कलक्टर के हाजिरी रजिस्टर।
- निरीक्षण उपरान्त आवश्यक दस्तावेजों को चिह्नित कर प्रतियां नियमानुसार शुल्क जमा करवा कर प्राप्त कर लूंगा।
- मुझे आपके कार्यालय के उस जिम्मेदार अधिकारी/कर्मचारी का पद नाम, नाम व मोबाइल नम्बर बता दें, जिनके पास जाकर मैं दस्तावेजों का निरीक्षण कर सकता हूं।
- फीस के संदाय के रूप में 10/- रुपए का भारतीय पोस्टल ऑर्डर सं. ..... संलग्न हैं।

स्थान : जयपुर **आवेदक**
दिनांक : 26.12.19 **प्रतापसिंह शेखावत (एडवोकेट)**

महत्वपूर्ण :

- आवेदन बीपीएल या अन्तोदय श्रेणी का है तो आवेदन व सूचना निःशुल्क होगी।
- निरीक्षण का प्रथम घंटा निःशुल्क रहेगा।
- दूसरे घंटे से 5/- रुपए प्रति घंटा शुल्क देय है।
- निरीक्षण करते समय जिन दस्तावेजों की आवश्यकता है उनका बिन्दुवार विवरण तैयार कर लोक सूचना अधिकारी के नाम प्रार्थना पत्र देवें। इस हेतु दुबारा शुल्क देय नहीं होगा।
- उक्त चिह्नित दस्तावेज हेतु आप द्वारा प्रस्तुत पत्र के 30 दिवस में सूचना उपलब्ध नहीं करवाई जाती है तो प्रथम अपील प्रस्तुत की जा सकती है।
- निरीक्षण करते समय किसी भी लोकसेवक द्वारा सद्व्यवहार नहीं करने पर उससे उलझना नहीं चाहिए। उससे उच्चाधिकारियों को अवगत करवाना चाहिए।

हार्दिक बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं

क्षत्रिय समाज की सुप्त क्षात्र शक्ति को जागृत कर विश्वात्मा की योजनानुसार दायित्व पर आरुढ़ करने में संलग्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ

के विगत

22 दिसम्बर को गौरवपूर्ण

73 वर्ष पूर्ण

होने एवं इस उदात्त मार्ग के

संस्थापक पूज्य तनसिंह जी की जयंती (25 जनवरी)

के उपलक्ष में इस मार्ग पर चलने वाले सभी पथिकों को

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

शुभेच्छु :

श्री आशापुरा इंजीनियरिंग एण्ड कंस्ट्रक्शन कंपनी
वर्मा नगर, कच्छ
प्रो. तनसिंह रणमल सिंह विजाबा

आदेश मेडिकल एण्ड क्लीनिक
वर्मा नगर कच्छ
प्रो. तनसिंह रणमल सिंह विजाबा

श्री आशापुरा बिल्डिंग मैटेरियल्स एण्ड सप्लायर्स
गडरारोड़, बाड़मेर।
प्रो. बलवीरसिंह रणमलसिंह विजाबा

श्री आशापुरा लेबोरट्री
दयापर, कच्छ।
प्रो. पूर्णसिंह रणमल सिंह विजाबा

जीवनधारा हॉस्पीटल
तखतगढ़
प्रो. डॉ. विक्रमसिंह नारायणसिंह भदरू

अनुकूल हॉस्पीटल
आहोर
प्रो. हितेन्द्रसिंह अनोपसिंह भदरू

राठौड़ लेबोरेट्री भीमासर
प्रो. भवानीसिंह नखतसिंह देदुसर।

श्री आशापुरा लेबोरेट्री नलिया
प्रो. खींवराज सिंह लखसिंह विजाबा

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org